शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

स्नातकोत्तर हिंदी

नाम: संस्कृती शाबा गावकर

अनुक्रमांक: 23P0140007

HIN-675

PR Number: 201804732

परीक्षक: प्रो. दीपक वरक

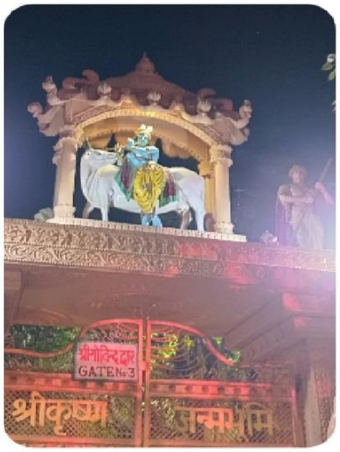

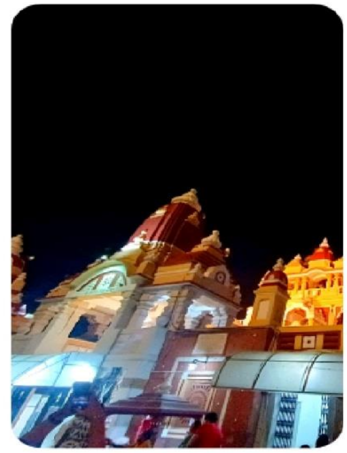

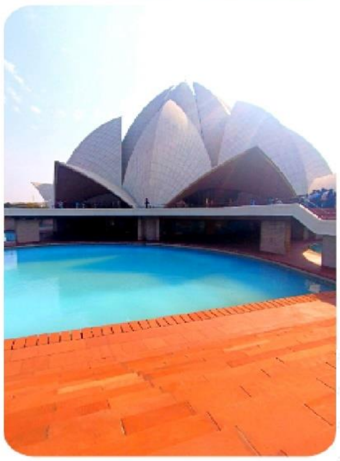

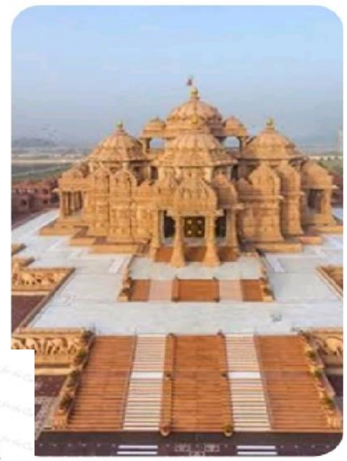

HIN- 527

हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

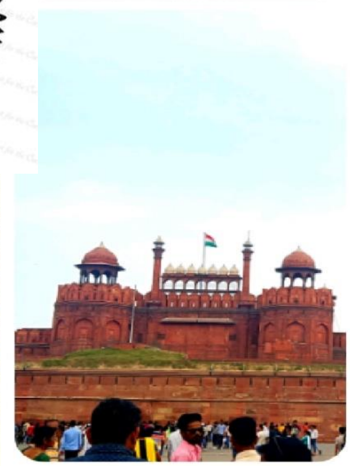

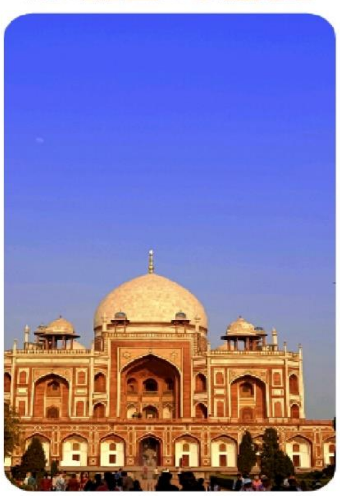

प्रस्तावना

हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा के पाठयक्रम के अंतर्गत हमें भ्रमण के लिए हिंदी भाषीय क्षेत्र दिल्ली में ले जाया गया। दिल्ली क्षेत्र में अध्ययन के दौरान हमने अक्षरधाम मन्दिर, इण्डिया गेट, संगीत नाटक कला अकादमी, साहित्य अकादमी, ललित कला अकादमी, लोटस टेंपल या कमल मंदिर, हुमायूँ का मकबरा, श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू कॉलेज, डॉ. बी.आर.अंबेडकर सेंट्रल लाइब्रेरी, क़ुतुब मीनार, ताज महल, श्री कृष्ण जन्मभूमि, उग्रसेन की बावली, राष्ट्रीय बाल भवन, राज घाट, गांधी दर्शन प्रदर्शन, जामा मस्जिदमस्जिद और लाल किला जैसे क्षेत्र विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व से हमें परिचित करवाया। इसी के साथ हमने पुरातात्विक संदर्भ और साक्ष्य को एकत्र किया।

मडगांव से इंद्रप्रस्थ तक का सफर

ये राहें ले ही जाएँगी मंज़िल तकहौसला रख

कभी सुना है कि अंधेरों ने सवेरा ना होने दिया !!

ट्रेन जैसी हो गई है ज़िंदगी, मंज़िल पर पहुँचती तो है, पर काफ़ी लेट से। और हम समय से कुछ दो घंटे पहले से ही मौजूद थे। इतनी सारी मुश्किलों के बाद 10 मार्च को दिलवालों की दिल्ली के लिए हमारा सफर शुरू हुआ। २७ छात्रों के साथ 2 प्राध्यापक हमारे साथ थे। और इस सुहावने सफर के लिए सभी उत्तेजित थे।

रेल यात्रा का सभी को अनुभव था पर अपने दोस्तों के साथ जाने का मजा कुछ अलग ही होता है। जिंदगीभर की यादें संजोगने के लिए सभी उत्सुक थे।

शहर का इतिहास **महाभारत** के जितना ही पुराना है। इस शहर को **इंद्रप्रस्थ** के नाम से जाना जाता था, जहां कभी पांडव रहे थे। समय के साथ-साथ इंद्रप्रस्थ के आसपास आठ शहर : **लाल कोट, दीनपनाह, किला राय पिथौरा, फिरोज़ाबाद, जहांपनाह, तुगलकाबाद और शाहजहानाबाद बसते रहे।**

यहां खिलजी और तुगलक वंशों के बाद मुग़लों ने शान किया। यह पुरा इतिहास हमें पता था बस उन्हीं चीजों को स्वयं देखने और अनुभव करने का समय आ चुका था।

हिन्दू राजाओं से लेकर मुस्लिम सुल्तानों तक, दिल्ली का शासन एक से दूसरे शासक के हाथों जाता रहा। **शहर की मिट्टी खून, कुर्बानी और देश-प्रेम** से सींची हुई है। प्राचीन काल से ही पुरानी 'हवेलियां' और इमारतें खामोश खड़ी हैं किन्तु उनका खामोशियां अपने मालिकों और उन लोगों को सदाएं देती हैं जो सैंकड़ों वर्षों पहले उनमें रहे थे।

1803 ई. में शहर पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। वर्ष 1911 में, अंग्रेजों ने कलकत्ता से बदलकर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। यह शहर पुनः शासकीय गतिविधियों का केन्द्र बन गया। किन्तु, शहर की प्रतिष्ठा है कि वह अपनी गद्दी पर बैठने वालों को बदलती रहा है। इनमें ब्रिटिश और वे वर्तमान राजनीतिक पार्टियां भी शामिल हैं, जिन्हें स्वतंत्र भारत का नेतृत्व करने का गौरव हासिल हुआ है।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, नई दिल्ली को अधिकारिक तौर पर **भारत की राजधानी** घोषित किया गया।

दो दिन की रेल यात्रा के पश्च्यात हम दिल्ली पहुँचे और पहले ही दिन हमने **अक्षरधाम मंदीर** के दर्शन किए।

अक्षरधाम मंदीर

20 मार्च 2024

स्थान: पांडव नगर

स्वामी नारायण अक्षरधाम तक पहुँचने के लिए हमने दिल्ली की मेट्रो से यात्रा की। १०० एकड़ में फैला इस मंदीर का परिसर इतना व्यापक है जो ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण की पुण्य स्मृति में बनवाया गया दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर परिसर होने के नाते २६ दिसम्बर २००७ को यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में शामिल किया गया है।

मंदीर के प्रवेश से इसका इतिहास तथा मंदीर बनाने के पीछे का उद्देश्य और कई सारी जानकारी देने के उद्देश्य से एक **प्रदर्शन** है जहाँ उस मंदीर के संदर्भ में सारी जानकारी मिल जाती है। मंदिर को बनाने में **स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं** किया गया।मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से इसे बनाया गया। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख **स्वामी महाराज** के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। जिनका पुतला प्रदर्शन के बिचो बीच लगाया गया है।

मंदीर की संरचना अद्बितीय है। नक्काशीदार स्तंभों, गुंबदों और 20,000 मूर्तियों के साथ सजाया गया यह मन्दिर अत्यन्त दिव्य है। मंदीर की संरचना पर बनाये गए यह मूर्तियाँ असली प्रतीत होती है। दक्ष द्वार, भक्ति द्वार और मयूर द्वार की अपनी- अपनी कुछ विशेषता है।

मंदीर में फोन ले जाने का प्रतिबंध था पर फिर भी इस मंदीर की तस्वीर हमारे दिलों दिमाग में छप गयी।

अखिल भारतीय युद्ध स्मारक

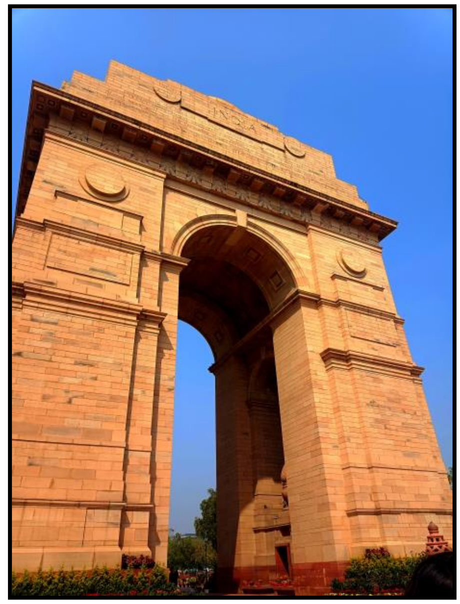

दिनांक: 21 मार्च 2024

स्थान: राष्ट्रीय राजमार्ग 24, राजपथ

२१ अप्रैल की सुबह सर्वप्रथम हम **'अखिल भारतीय युद्ध स्मारक'** यानी **'इंडिया गेट'** की और प्रस्थान किया। पुरा परिसर ललित फूलों से सजा हुआ था। इंडिया गेट को 1914 और 1919 के बीच शहीद ब्रिटिश सैनिकों की याद में बनाया गया था।

इंडिया गेट का डिज़ाइन बीसवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार एड्विन लैंडसियर लूट्चन्स ने तैयार किया था। जिसे **भरतपुर** से लाए गए लाल और पीले पत्थरों से बनाया गया है। शुरुआत में इंडिया गेट का नाम 'ऑल इंडिया वॉर मेमोरियल' रखा गया था। इसका डिज़ाइन **प्लास शार्ले द गोल** के केंद्र में स्थित पेरिस के आर्क डे टॉयम्फ से प्रेरित है। 26 जनवरी 1972 को अमर जवान ज्योति का अनावरण इंदिरा गांधी ने किया था। यह दुनिया के सबसे बड़े वैश्विक युद्ध स्मारक के तौर भी जाना जाता है।

प्रथम विश्व युद्ध में मारे गए सैनिकों के लिए भारत की सबसे बड़ी युद्ध कब्रों और स्मारकों की आधारशिला 10 फरवरी 1921 को ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा रखी गई थी। इसकी दीवारों पर उन भारतीय सैनिकों के नाम अंकित हैं, जिन्होंने अफगान युद्ध और प्रथम विश्व युद्ध में अपने प्राण न्यौछावर किए थे।

उसी परिसर के अंतर्गत स्मारिका है जहाँ की दीवारों पर अनेक युद्धों का वर्णन किया गया है। वहाँ मिलिट्री के संदर्भ में कुछ चीजें बेचने के लिए भी रखी गयी है।

स्मारिका के दीवारों पर सैन्य गौरव के क्षण : 1947 से लेकर 1962 तक के युद्धों का वर्णन किया गया है जिसमें जोजिला की लड़ाई : 1948,राजौरी का कब्जा : 1948, हैदराबाद का कब्जा : 1948, गोवा की आजादी 1961, रेजांग-ला की लडाई: 1962 इसी के साथ सैन्य गौरव के क्षण भारत-पाकिस्तान युद्ध : 1965 का भी वर्णन यहाँ किया गया है।

कला दीर्घा

ललित कला अकादेमी

स्थान: रविंद्र भवन- नई दिल्ली

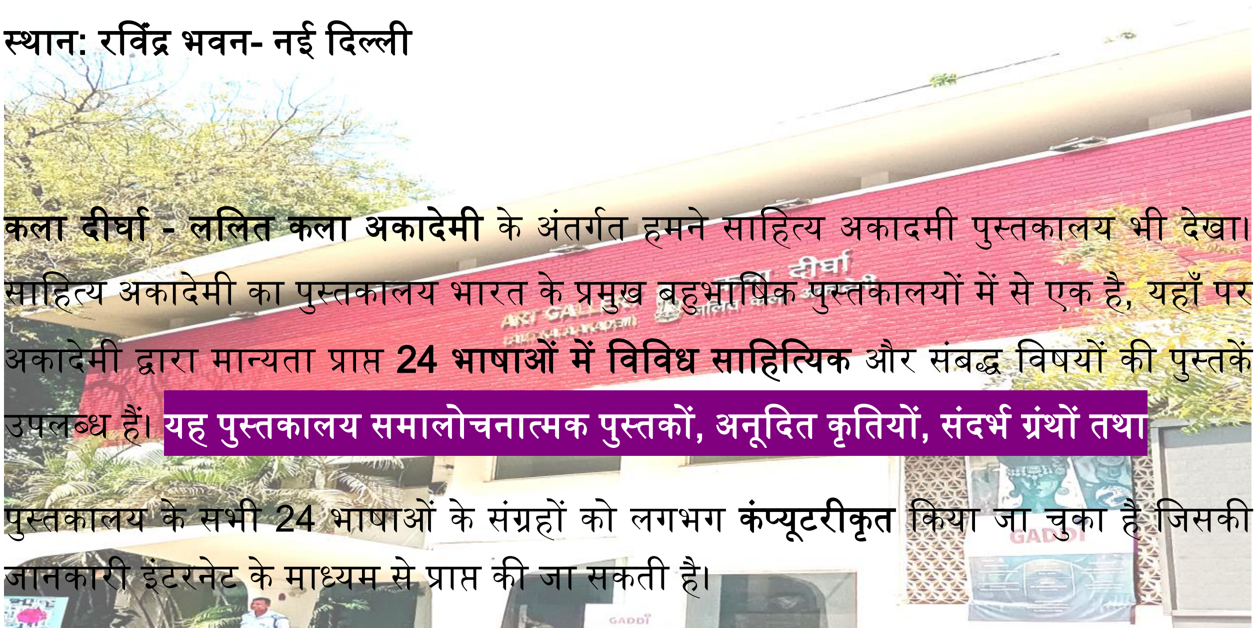

कला दीर्घा - ललित कला अकादेमी के अंतर्गत हमने साहित्य अकादमी पुस्तकालय भी देखा। साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ पर अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त **24 भाषाओं में विविध साहित्यिक** और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। **यह पुस्तकालय समालोचनात्मक पुस्तकों, अनूदित कृतियों, संदर्भ ग्रंथों तथा**

पुस्तकालय के सभी 24 भाषाओं के संग्रहों को लगभग **कंप्यूटरीकृत** किया जा चुका है जिसकी जानकारी इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

इसके अंतर्गत हमने नाटक के संदर्भ में अनेक पत्रिकाएं भी देखी जैसी गगनांचल, कलावसुधा-प्रदर्शन कवी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका, नटरंग, इप्टा वार्ता - कलाओं का खबरनामा, Sangeet Natak जो अंग्रेज़ी में प्रकाशित होती है, स्वर सरिता कला, संस्कृति और पर्यटन को समर्पित मासिक पत्रिका, छायानट पुतुला कला विशेषांक, संस्कृति, रंग प्ररूम - राष्ट्रिय नाट्य विद्यालय का प्रारूप आदि।

संगीत नाटक अकादमी

संगीत नाटक अकादमी- भारत की राष्ट्रीय संगीत अकादमी, **नृत्य और नाटक** - भारतीय गणराज्य द्वारा स्थापित कला की पहली राष्ट्रीय अकादमी है। इसकी स्थापना भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा दिनांक **31 मई 1952** को हुयी थी, जिसे जून 1952 के भारतीय राजपत्र में अधिसूचित किया गया।

इसके अंतर्गत हमने अनेक आदिवासी वाद्य देखे जैसे नगारा, नागर, वीणा, इकतारा और गोवा का वाद्य घुमट भी वहा प्रदर्शित किया गया था।

वहीं पर उसके सामने वाले कमरे में अनेक **मुखोटों का प्रदर्शन** लगाया गया था। जहाँ अनोखे मुखोटे बनाकर रखे गए थे।

लोटस टेंपल

स्थान: नेहरू प्लेस

भारत के लोगों के लिए **कमल** का फूल पवित्रता तथा शांति का प्रतीक होने के साथ ईश्वर के अवतार का संकेत चिह्न भी है। यह फूल कीचड़ में खिलने के बावजूद पवित्र तथा स्वच्छ रहना सिखाता है। लोटस टेंपल एक बाह्य उपासक मंदीर है। जहाँ पर लोग ध्यान लगाने के लिए जाते है। उस स्थान पर मन को एक सुकून सा मिलता है। यह अपने आप में एक अनूठा मंदिर है। यहाँ पर न कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार का कोई धार्मिक कर्म-कांड किया जाता है। आनेवाले सभी पर्यटकों को बहाई धर्म का परिचय दिया जाता है।

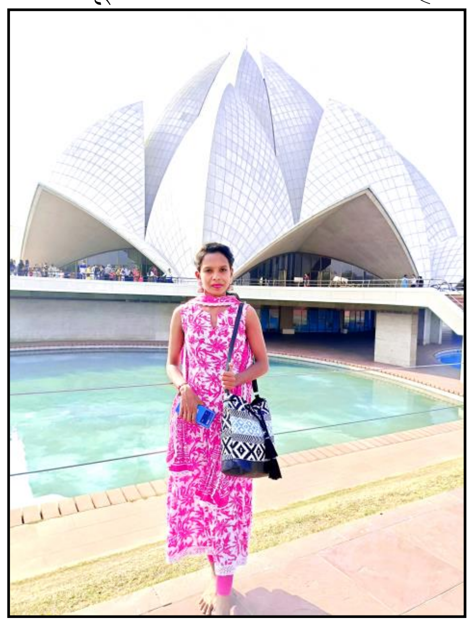

यह मंदिर हिंदू और बौद्ध धर्म सहित सभी धर्मों के लिए बनाया गया है। धार्मिक पुस्तकों को पढ़ाने के लिए लाइब्रेरी और आडियो-विजुअल रूम भी बने हुए हैं। बहाई समुदाय के मुताबिक, ईश्वर एक है और उसके रूप अनेक हो सकते हैं। मूर्ति पूजा को नहीं मानते हैं, लेकिन नाम कमल मंदिर है।इसके साथ ही मंदिर के अंदर किसी भी वाद्य यंत्र को बजाने पर सख्त पाबंदी है। मंदिर में आपको बिल्कुल भी बोलने की अनुमति नहीं होती, यहां हमेशा शांति बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

स्थान: निज़ामुद्दीन

मुगल का छात्रावास

भारत में मुगल वास्तुकला का एक खूबसूरत उदाहरण, दिल्ली में हुमायूं का मकबरा। 16वीं शताब्दी में बनाया गया था । स्मारक में मुगल सम्राट हुमायूं का मकबरा है और खूबसूरती से सदियों पुराने आकर्षण और सुंदरता को समेटे हुए है। हमीदा बानो बेगम के आदेश पर निर्मित, हुमायूँ के मकबरे की वास्तुकला ताजमहल जैसी ही। हमीदा बानो बेगम ने अपने पति के प्रति प्यार के संकेत के रूप में इसे बनवाया था।

हुमायूं का मकबरा, जिसे "मुगल का छात्रावास" भी कहा जाता है, एक या दो नहीं बल्कि एक ही परिसर के अंदर 100 मकबरे हैं ऐसा कहा जाता है। हुमायूं के मकबरों पर कुछ भी इतिहास न लिखे रहने की वजह से, मकबरा किसका है ये पहचान पाना थोड़ा मुश्किल है। इसके अंदर मैंने केवल चार ही मकबरे देखे।

मकबरे का बाहरी नजारा बेहद खूबसूरत है, क्योंकि यह भारत में निर्मित पहला बागों वाला मकबरा है।

हुमायूं का मकबरा लगभग 8 वर्षों में बनकर तैयार हुआ था और इसके निर्माण में लगभग 1.5 मिलियन रुपये खर्च किए गए थे। एक फारसी वास्तुकार, मिराक मिर्जा घियाथ द्वारा डिजाइन किया गया, मकबरा आठ-पक्ष कक्षों की अवधारणा पर बनाया गया है जो इस्लामी स्वर्ग विचारधारा का प्रतीक है। इसके निर्माण के तुरंत बाद, इसने मुगल वास्तुकला के विस्तार में एक ऐतिहासिक स्मारक का दर्जा प्राप्त किया।

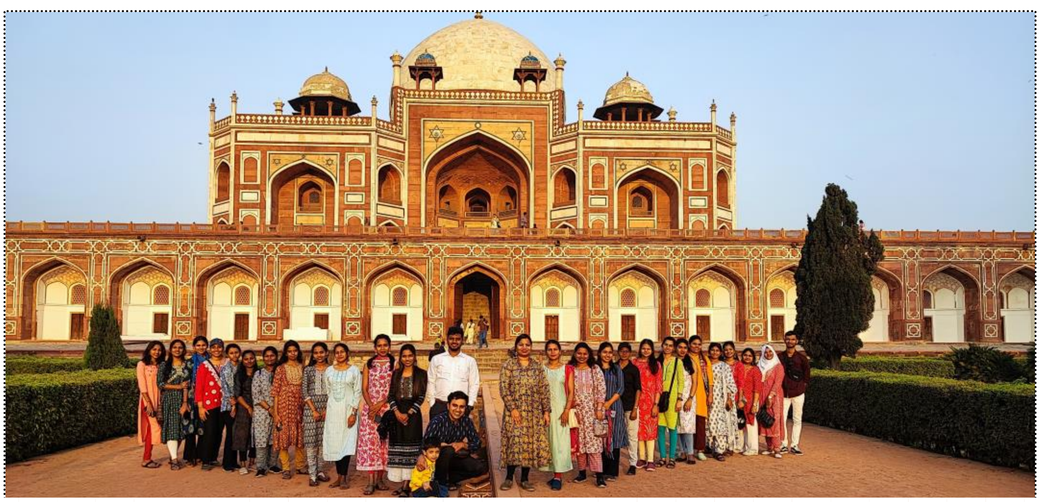

लक्ष्मी नारायण मंदिर

स्थान: कनॉट प्लेस के पश्चिम

इसके पश्च्यात हम रात के लगभग ८ बजे लक्ष्मी नारायण मंदीर पहुँचे। यह मंदिर बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण १९३८ में हुआ था और इसका उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था।इसके वास्तुशिल्प की बात की जाए तो यह मंदिर उड़ियन शैली में निर्मित है। मंदिर का बाहरी हिस्सा सफेद संगमरमर और लाल बलुआपत्थिर से बना है जो मुगल शैली की याद दिलाता है। मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है। साथ ही मंदिर परिसर में भगवान शिव, गौतम बुद्ध और भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर भी स्थित हैं। मंदिर के अंदर कैमरे ले जाने की अनुमति नहीं है।

दिल्ली विश्वविद्यालय

22 मार्च 2024

स्थान: तीमारपुर

दिल्ली में होली चालीस दिन पहले ही मनानी शुरू हो जाती है। जिसके चलते सभी स्कूल, विश्वविद्यालय को छुटटी थी। दिल्ली विश्वविद्यालय कला संकाय में भी छुट्टी होने के कारण कॉलेज बंद था। कॉलेज के अंदर जाने की अनुमति बहुत मुश्किल से मिली। विश्वविद्यालय का परिसर अत्यंत रमणीय था। तथा हमने कॉलेज के अन्य कक्षाओं का भी निरीक्षण किया। **दिल्ली विश्वविद्यालय** की स्थापना 1922 में ब्रिटिश भारत के तत्कालीन केंद्रीय विधान सभा के एक अधिनियम द्वारा एकात्मक, शिक्षण और आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। **हरि सिंह गौर** ने 1922 से 1926 तक विश्वविद्यालय के पहले कुलपति के रूप में कार्य किया।

हिंदू कॉलेज

स्थान: नयी दिल्ली

हिंदू कॉलेज के प्राध्यापक ने हमारा स्वागत करते हुए पूरे कॉलेज की जानकारी दी। हिंदी विभाग की जानकारी देते हुए उन्होंने कॉलेज में प्रकाशित अनेक **पत्रिकों** की जानकारी दी जो **छात्र स्वयं अपने हाथों से बनाते है और खुद उसे सिते भी है।**

'लहर' नामक पत्रिका में हिंदी विभाग के छात्र अपने विचार कविता, लेखों के माध्यम से व्यक्त करते है।

'अभिव्यक्ति' नाम की और एक पत्रिका का संपादन छात्रों द्वारा ही की जाती है जिसमें हिंदी विभाग के अलावा दूसरे छात्रों को अपनी लेखन की कला दिखाने का अवसर प्राप्त होता है।

इसी प्रकार अन्य विभाग जैसे संस्कृत में भी ऐसी अनेक पत्रिकाएं निकली जाती है जो छात्रों के द्वारा छात्रों के लिए होती है।

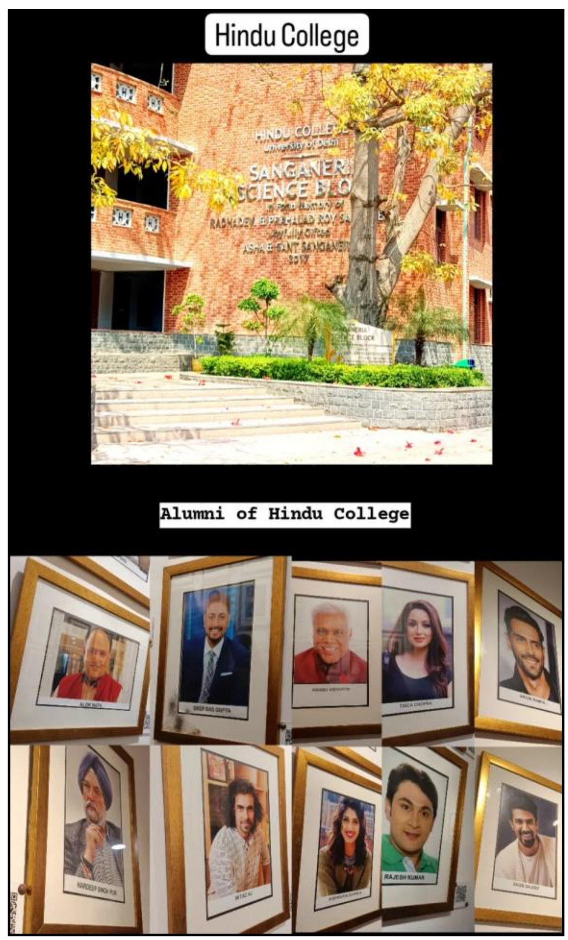

हिंदू कॉलेज प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में से एक है। जिसमें पढ़ने वाले अनेक छात्र **वर्तमान समय में बड़े पर्दे पर हमें नज़र आते है।** आशीष विद्यार्थी, अर्जुन रामपाल, रोशन अब्बास, ऐश्वर्या शाकुजा, राजेश कुमार, साकीब सलीम, आलोक नाथ, दीपदास गुप्ता, हरदीप सिंह पूरी आदि ऐसे प्रख्यात नाम थे जिन्हें मैं जानती थी। इन सभी भूतपूर्व छात्रों की तस्वीरें **'एल्यूमिनी गैलारी'** में दर्शायी गयी थी।

कॉलेज के १२५ वर्ष पूरे होने के नाते भारत सरकार ने कॉलेज के नाम पर एक **डाक टिकट** भी जाहिर किया था।

वहाँ पर पी. एच. डी कर रहे एक छात्र ने हमें कॉलेज के **इतिहास** के बारे में बताया कि इस कॉलेज की स्थापना कैसे हुई थी। हिंदू कॉलेज की स्थापना १८९९ में **कृष्ण दासजी गुरवाले** ने की थी। कृष्ण दासजी जब **सेंट स्टीफन कॉलेज** में एडमिशन के लिए गए तो उन्हें वहाँ मना कर दिया गया। क्योंकि वह उस समुदाय से नहीं थे। तब उन्होंने निर्णय लिया था कि वह एक ऐसे कॉलेज की स्थापना करेंगे जिसमें एक रिक्शे वाले के लड़के से लेकर कोई पॉलिटिकल का लड़का साथ में पढ़ेंगे। और फिर १८९९ में इसकी स्थापना की गयी। दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन कॉलेज है:- **सेंट स्टिफ़न जो १८८१ में स्थापित हुई थी, फिर हिंदू कॉलेज १८९९** और रामजस सहाय १९१७ में और यह तीन कॉलेज को दिल्ली की हेरिटेज कॉलेज बोला जाता है। हेरिटेज बोलने का संदर्भ यह है की जितने भी **स्वतंत्रता सेनानी थे उन्होंने आकर बच्चों का सहयोग लिया। स्वतंत्रता संग्राम में भी इस कॉलेज की भूमिका अत्यधिक रही है।** कॉलेज का मुख्य कार्यक्रम **'मिक्का'** में बड़े अदाकार सुनिधि चौहान, मोहित चौहान, ए. आर. रहमान सभी परफ्रॉम करते है। वही कॉलेज के छात्र मिलकर **'हस्ताक्षर'** नाम की पत्रिका निकालते है जिसकी सिलाई भी वह हाथों से करते है बिना किसी टेक्नोलॉजी के। यह एक मात्र कॉलेज है जहाँ प्रधान मंत्री के लिए चुनाव होता है जो भारत की किसी अन्य कॉलेज में नहीं होता। और जो जीतता है वह अपनी पूरी कैबिनेट बनता है जिसमें दस मिनिस्टर और दस कैबिनेट रहेंगे। यह एक मात्र कॉलेज है जिसका पॉलिटिकल स्ट्रक्चर है। हिंदू कॉलेज का संविधान भी है जो उसको खास बनाता है। तब से लेकरr अब तक स्टीफन कॉलेज के साथ वाद- विवाद अनेक विषयों को लेकर होता रहता है। जहाँ-जहाँ स्टीफन कॉलेज है वहाँ-वहाँ सामने हिंदू कॉलेज बनाया गया है।

JNU

स्थान: नयी दिल्ली

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय भारत का एक प्रसिद्ध केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जो भारत की राजधानी नई दिल्ली के दक्षिणी भाग में स्थित है। जेएनयू को वर्ष 2017 में भारत के राष्ट्रपति की ओर से **सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय** का पुरस्कार मिला।जे॰एन॰यू॰ में हमारा उस दिन प्रवेश हुआ जिस दिन उनके चुनाव थे। और जे॰एन॰यू॰ का इलेक्शन नहीं देखा तो क्या देखा। माहोल पुरा गरमाया हुआ था। एक तरफ चुनाव चल रहे थे तो दूसरी तरफ नारे बाज़ी। हर जगह पर पोस्टर लगाए हुए थे।

जेएनयू की प्रगतिशील परंपरा और शैक्षिक माहौल के लिए यहां के छात्र संघ का बड़ा महत्व माना जाता है। यहां के कई छात्र संघ सदस्यों ने बाद के दिनों में भारतीय राजनीति और सामाजिक आंदोलनों में अहम भूमिका निभाई है, इनमें कन्हैया कुमार, प्रकाश करात, सीताराम येचुरी, डी. पी. त्रिपाठी, आनंद कुमार, चंद्रशेखर प्रसाद आदि प्रमुख हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विवाद कोई नई बात नहीं है। समय-समय पर लोग इसे 'घातक राजनीति का अड्डा' 'देशद्रोही गतिविधियों का केन्द्र', 'दरार का गढ़' आदि कहते रहे हैं। इसके छात्रों और अध्यापकों पर भारत में नक्सवादी हिंसा का समर्थन करने और भारतविरोधी कार्यों में संलिप्त रहने के आरोप भी लगते रहे हैं। जैसे २०१६ विवाद कार्यक्रम और प्रतिक्रियाएँ, **विवादास्पद नारेबाजी, विश्वविद्यालय के अधिकारियों की प्रतिक्रिया, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के सैनिकों की प्रतिक्रिया, छात्र नेताओं की गिरफ़्तारी** आदि।

डॉ बी आर अम्बेडकर केंद्रीय पुस्तकालय

चुनाव का माहोल देखने के उपरांत हम पुस्तकालय की ओर बड़े। **नौ मंजिला भवन** का यह विशाल पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में **5 लाख से अधिक पुस्तकें** हैं, विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र, विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाएं एवं शोधार्थी द्वारा जमा किए गए थीसिस एवं डिसर्टेशन, विभिन्न विषयों के डेटाबेस, गवर्नमेंट डॉक्युमेंट्स, यूएन डॉक्युमेंट्स आदि उपलब्ध है।यह पुस्तकालय 24 घंटे खुला रहता है। गौर करने वाली बात यह है कि इस पुस्तकालय की खिड़की से कुतुब मीनार का नजारा देख सकते है।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार भारत की राजधानी दिल्ली में मौजूद तीन विश्व धरोहरों में से एक है। गज़नी ने अपनी जीत पर जो मीनारें बनवाई थीं उनको देखकर 1192 ईसवी में कुतुब-उद-दीन- ऐबक ने कुतुब मीनार का काम शुरू करवाया था। इसके नीचे के हिस्से में कुवत-उल-इस्लाम की मस्जिद बनी है। यह भारत में बनने वाली पहली मस्जिद थी। कुतुब-उद-दीन-ऐबक के उत्तराधिकारी, इल्तुतमिश और फिरोज़ शाह तुगलक ने मीनार का बचा हुआ काम पूरा करवाया। कुतुब-उद-दीन-ऐबक ने मीनार का निचला हिस्सा पूरा बनवा दिया था। इसके बाद इल्तुतमिश ने तीन मंज़िलें और फिरोज़ शाह ने आखिरी मंज़िल बनवाई। परिसर के अंतर्गत कोई सूचना पट्टी न होने के कारण इसका इतिहास पर्यटकों से वंचित रहा।

कुतुब मीनार में सैलानी **अलाई दरवाज़ा** घूमने भी जा सकते हैं। **अलाउद्दीन खिलजी** का बनवाया गया यह दरवाज़ा तुर्की के कारीगरों की कुशलता का एक शानदार नमूना है। इस दरवाज़े के पास ही अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनवाई हुई **अलाई मीनार** मौजूद है। खिलजी इस इमारत को कुतुब मीनार से दो गुना ऊंचा बनाना चाहता था।

अफ़सोस की बात है कि सन् 1316 में खिलजी की मौत के बाद, इस मीनार का काम ठप हो गया। आज भी, यहां इस मीनार की पहली मंज़िल की चुनाई और मलबा देखा जा सकता है।

कुतुब मीनार के पास ही इल्तुतमिश का मकबरा भी है। सम्राट इल्तुतमिश ने खुद इस मकबरे को बनवाया था। यह दिल्ली के पहले मकबरों में से एक है।

रिपोर्ट्स की मानें तो **1981 में लोगों के साथ यहां एक भयानक हादसा** हुआ था। जिसकी वजह से अंदर भगदड़ हो गई थी और कई लोगों की मौत हो गई। जिसके बाद से ही कुतुब मीनार का दरवाजा बंद कर दिया गया।

वाह ताज

23 मार्च 2024

स्थान: आगरा

23 मार्च की सुबह 4 बजे आगरा के लिए रवाना हुए। करीब करीब 6-7 घंटे का सफर हमने तै किया। और आखिरकार अपनी मंज़िल पर पहुँच ही गए।

ताजमहल को दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक माना जाता है। यह भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा शहर में स्थित है। ताजमहल को मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। मुमताज महल की मृत्यु 1631 में उनके 14वें बच्चे को जन्म देते समय हुई थी।

ताजमहल का निर्माण 1632 में शुरू हुआ और 1653 में पूरा हुआ। इसकी लागत उस समय के लगभग 32 करोड़ रुपये थी। ताजमहल को बनाने में लगभग 22,000 श्रमिकों ने काम किया।

ताजमहल को सफेद संगमरमर से बनाया गया है, जो भारत के दक्षिण में स्थित राजस्थान राज्य से लाया गया था। ताजमहल को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ताजमहल के नीचे एक तहखाना है, जहां मुमताज महल और शाहजहाँ की कब्रें हैं। ताजमहल को बनाने वाले वास्तुकार का नाम उस्ताद अहमद लाहौरी था। ताजमहल एक अद्भुत है जो प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। यह दुनिया भर के लोगों को अपनी सुंदरता स्मारक से मंत्रमुग्ध करता है।

ताजमहल को बनाने के लिए 1700 हाथीदांत के टुकड़े का इस्तेमाल किया गया था। ताजमहल के अंदरूनी हिस्से को सफेद संगमरमर से सजाया गया है, जिस पर अरबी और फारसी में शिलालेख हैं।

ताजमहल की वास्तु शैली में **फारसी, तुर्क, भारतीय एवं इस्लामी वास्तुकला का मिश्रण है**।ताजमहल के निर्माण के लिए विभिन्न एशियाई देशों से बहुमूल्य पत्थरों को लाया गया था। ताजमहल के निर्माण के लिए तिब्बत से नीला रत्न, श्रीलंका से पन्ना और क्रिस्टल को चीन से लाया गया था।

ताज महल मुख्य रास्ते से बहुत दूर है। अंदर तक जाने के लिए दूसरे वाहन से जाना पड़ता है। इसे मुख्य रास्ते से दूर रखा गया है ताकि वाईब्रेशन से उसे हानि न पहुँच सके।

ताजमहल के चारों और पिलर है जो भूकंप आदि से ताजमहल को सुरक्षित रखते है। पहले ममताज और शहाजहाँ के मकबरे में जाने की अनुमति थी जो ठीक ताजमहल के अंदर बीचों बीच सीमेंट का बनाया गया है उसके नीचे है। अत्यधिक भीड़ होने के कारण **लोगों का दम घुटने लगा और अंदर प्रवेश निषेद कर दिया गया।** पोर्णिमा के दिन ताजमहल में रात को प्रवेश दिया जाता है जहाँ चाँद की चांदनी महल पर पड़ने से वह चमकने लगता है। पर्यटक इसका लुभावना नजारा उठा सकते है। शुक्रवार को ताजमहल में स्थित मस्जिद में नमाज होने के कारण बंद रहता है। पहले वहाँ बाजार भी लगा करता था जिनके लिए रहने का बंदोबस्त भी वहाँ किया जाता था।

पिलर की कारीगरी ऐसी बनाई है जी नजदीक से इसके दो ही पहलू है पर दूर जाने से पाँच नजर आते है।

कृष्ण जन्म भूमि

स्थान: मथुरा

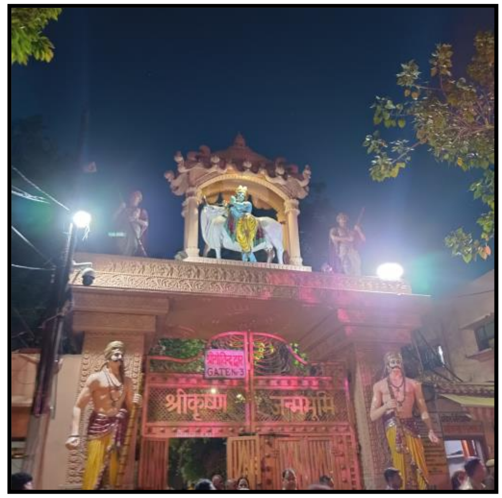

ताज महल के पश्च्यात हमने मथुरा की ओर प्रस्थान किया। **कृष्ण जन्म भूमि मथुरा** में हमें पहुँचते पहुँचते बहुत देर हो गयी थी। भीड़ से गुजरते हुए हम मंदीर में पहुँचे, और हमें मथुरा की होली देखने का सुहावना अवसर प्राप्त हुआ। मंदीर में भक्तों का जमावड़ा था और हमें राधा- कृष्ण के दर्शन प्राप्त हुए। हमारा मन तृप्त हो गया। गिरधर गोपाल और राधा से नज़र ही नही उठ रही थी। पर्दा बंद हुआ। कहा जाता है यहाँ पर्दा बार- बार गिराया जाता है। क्योंकि गोपाल इतने सुंदर और मनमोहक है कि उन्हें ज्यादा देर देखने से एक तो हम उनके प्यार में डूब जायेंगे या वे हमारे।

मंदीर के प्रांगण में **मस्जिद** भी है। इतिहास में इस मंदीर को कई बार नष्ट किया गया। मुगल **सम्राट औरंगजेब** द्वारा शाही ईदगाह मस्जिद का निर्माण कराया गया वो अभी भी मन्दिर के प्रांगण में स्थित है।

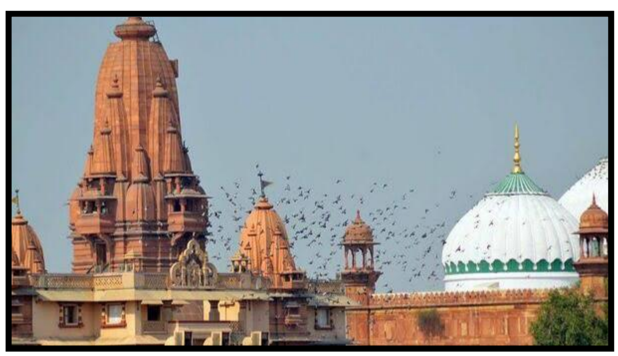

अग्रसेन की बावली

२४ मार्च २०२४

स्थान: कनॉट प्लेस

यह सोपानयुक्त कुआँ अथवा बावली, एक भूमिगत इमारत है जिसका निर्माण मुख्यतः मौसम के परिवर्तन के कारण जल की आपूर्ति में आई अनियमितला को नियंत्रण करनी हेतु जल के संग्रहण के लिये किया गया था। इस बावली का निर्माण अग्रवाल समुदाय के पूर्वज राजा अग्रसेन द्वारा किया गया। इस इमारत की मुख्य विशेषता उत्तर में स्थित गहरे कुएँ की ओर लम्बी कतारबद्ध सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों के दोनों ओर **मोटी दीवार की मेहराबबुक्त गलियारों** की श्रृंखला है। यह बावली उत्तर से दक्षिण दिशा में 60 मीटर लम्बी तथा भूतल पर 15 मीटर चौड़ी है। अन गढ़ तया गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली में बेहतरीन बावलियों में से एक है। इसकी स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुगलक तथा लोधी काल (15 ती - 16 वीं सदी ईसवी) से मेल खाती है।

पश्चिम की ओर तीन प्रवेश- द्वार युक्त एक मस्जिद है। यह एक ठोस ऊँचे चबूतरे पर किनारों की और भूमिगत दलानों से युक्त है। इसकी स्थापना में 'व्हेल महाली की पीठ के समान चैतन्य आकृति' की नकाशीयुक्त चार खम्भों का संयुक्त स्तंभ है।

राष्ट्रीय बाल भवन

स्थान: कोटला रोड, नई दिल्ली

राष्ट्रीय बाल भवन में प्रवेश करते ही उसके सुहावने दृश्य ने हमारा मन मोह लिया। बाल भवन के परिसर में चिड़िया घर था। इसी के साथ अनेक तरह के शीशे थे जिसमें हम मोट, पतले, लंबे, छोटे बल्कि अजीब आकृतियाँ बन रही थी। बच्चों द्वारा की गयी अनेक सृजनात्मक कलकृतियाँ प्रदर्शित की गयी थी।

राष्ट्रीय बाल भवन एक संस्था है जिसका उद्देश्य बच्चों को उनकी उम्र, योग्यता और क्षमता के अनुसार बातचीत करने, प्रयोग करने, निर्माण करने और प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न गतिविधियां, अवसर और सामान्य मंच प्रदान करके उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाना है। यह नवाचार की अपार संभावनाओं के साथ बिना किसी तनाव या तनाव के एक बाधा-मुक्त वातावरण प्रदान करता है।

राजघाट गांधी समाधि

राजघाट गांधी समाधि

स्थान का नाम : *राजघाट*

स्थान: *दिल्ली*

दिनांक: *24 मार्च 2024*

31 जनवरी 1948 **को इस स्थान पर महात्मा गांधी के** ***शहादत के बाद*** **उनका** ***दाह संस्कार*** **किया था।** ***राजघाट यमुना नदी के तट*** **पर स्थित** ***पुरानी दिल्ली*** **का एक घाट का नाम है। राष्ट्रपति को श्रद्धाजली निर्मित करने हेतु यह एक स्मारक निर्मित किया गया है। यह स्मारक खुले आसमान के नीचे काले संगमरमर का एक मंच स्थल है। जहाँ पर एक अखंड ज्योति जलती रहती है। और स्मारक पर हरे राम जो गांधी जी के अंतिम शब्द थे वह अंकित किये गए है जो** ***सदैव फूलों से सजा रहता है।*** **समाधि परिसर में प्रत्येक शुक्रवार कार्यक्रम और सर्व धर्म प्रार्थना को आयोजित किया जाता है।**

राजघाट का स्मारक बिचोबीच है और इसे चारों तरफ सुंदर सुंदर फुल लगाए गए है। उपर की तरफ से हम स्मारक का लुभावना दृश्य देख सकते है। यह समाधि स्वयं गांधी जी का एक सच्चा प्रतिर्बिंब है और उनकी सादगी का परिचय देती है। यहां ईंटों से बना एक चबूतरा है, जहां उनके मृत शरीर को जलाया गया था और यह काले संगमरमर का मंच, संगमरमर के किनारों से घिरा है।स्मारक का डिज़ाइन वनु जी. भूटा द्वारा किया गया था।और इस राष्ट्रीय स्मारक के वास्तुशिल्प डिजाइन के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

गांधी स्मारक म्यूजियम

उसी परिसर में एक ***गांधी स्मारक म्यूजियम*** भी है जहां पर प्रत्येक दिन गुरुवार को छोड़कर सुबह 9:30 बजे से शाम 5:30 बजे के बीच ***महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन के बारे में एक फिल्म*** दिखाई जाती है। रविवार को शाम 4 बजे हिंदी में और शाम 5 बजे अंग्रेजी भाषा में भी दिखाया जाता था। हम रविवार की सुबह वहाँ पहुँचने के कारण यह फिल्म देखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

गांधी दर्शन

दूसरा परिसर राजघाट पर महात्मा गांधी समाधि के निकट स्थित है।

महात्मा की शहादत के इक्कीस साल बाद पूरी दुनिया ने 1969 में उनकी शताब्दी को **शांति के तीर्थयात्री** के रूप में मनाने का फैसला किया। तब महात्मा गांधी की शताब्दी को चिह्नित करने के लिए छत्तीस एकड़ का विशाल परिसर अस्तित्व में आया था। गांधी दर्शन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी नामक जादू पैदा करने में तेरह भारतीय राज्यों और सात विदेशी देशों ने हाथ मिलाया था। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य आधुनिक दुनिया की पृष्ठभूमि के खिलाफ गांधी के संदेश और सत्य और अहिंसा के सुसमाचार की व्याख्या करना था और जिस तरह से इसने राष्ट्र के जीवन में प्रवेश किया और प्रभावित किया और आधुनिक दुनिया के अन्य देशों को प्रभावित किया।

आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियाँ मौजूद हैं - मेरा जीवन मेरा संदेश है और मिट्टी के मॉडल में स्वतंत्रता संग्राम। जिसमें से हमने एक ही देख और वह है:-

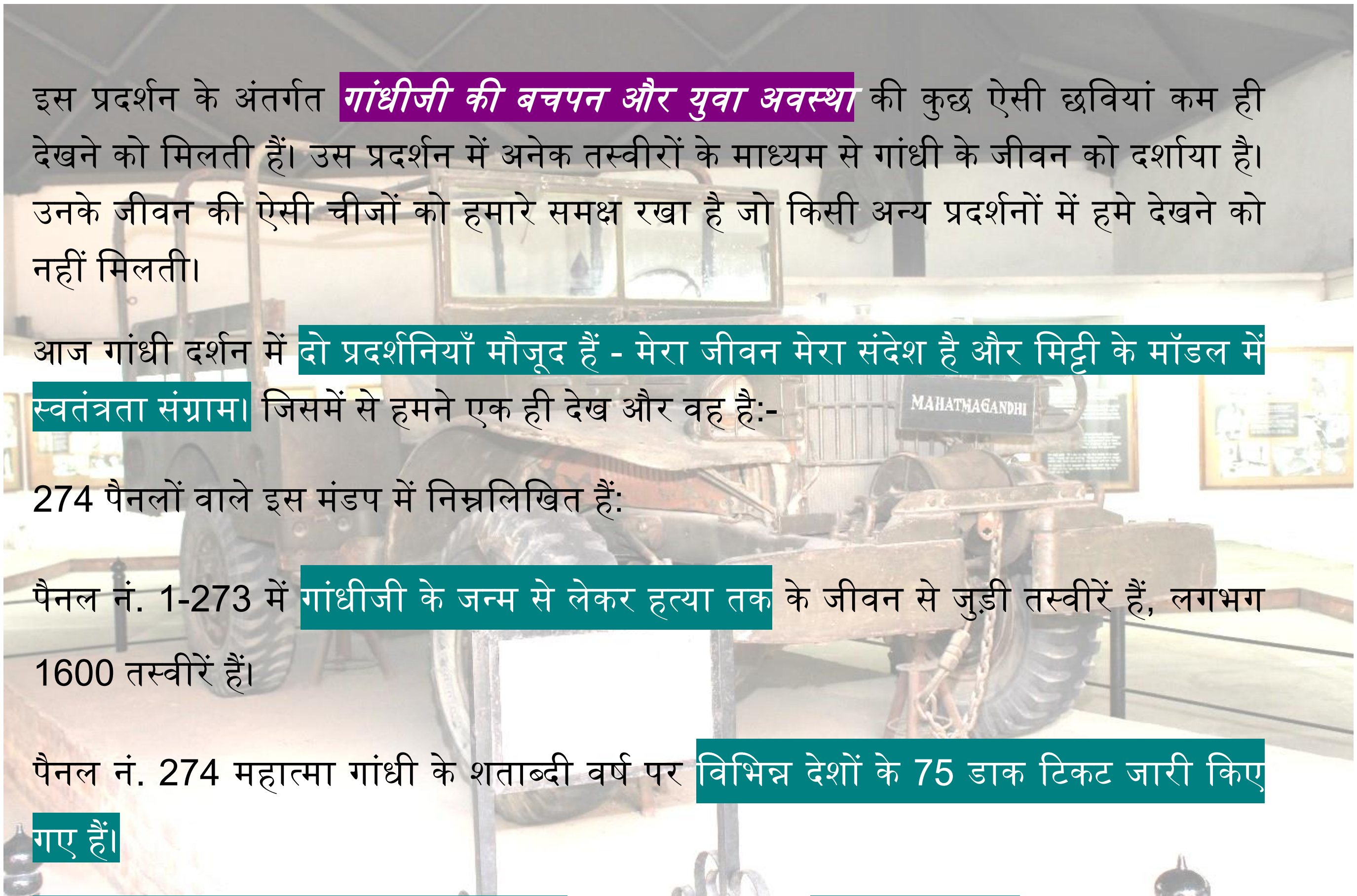

इस प्रदर्शन के अंतर्गत ***गांधीजी की बचपन और युवा अवस्था*** की कुछ ऐसी छवियां कम ही देखने को मिलती हैं। उस प्रदर्शन में अनेक तस्वीरों के माध्यम से गांधी के जीवन को दर्शाया है। उनके जीवन की ऐसी चीजों को हमारे समक्ष रखा है जो किसी अन्य प्रदर्शनों में हमे देखने को नहीं मिलती।

आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियाँ मौजूद हैं - मेरा जीवन मेरा संदेश है और मिट्टी के मॉडल में स्वतंत्रता संग्राम। जिसमें से हमने एक ही देख और वह है:-

274 पैनलों वाले इस मंडप में निम्नलिखित हैं:

पैनल नं. 1-273 में गांधीजी के जन्म से लेकर हत्या तक के जीवन से जुड़ी तस्वीरें हैं, लगभग 1600 तस्वीरें हैं।

पैनल नं. 274 महात्मा गांधी के शताब्दी वर्ष पर विभिन्न देशों के 75 डाक टिकट जारी किए गए हैं।

नमक सत्याग्रह और गन कैरिज के दौरान इस्तेमाल की गई नाव और बेंच हैं जो महात्मा गांधी के पार्थिव शरीर को बिड़ला हाउस से राजघाट तक ले गईं थीं।

<u>निम्नलिखित मॉडल हैं:</u>

- गुजरात के पोरबंदर में गांधीजी का घर
- साबरमती आश्रम
- यरवदा जेल
- गाड़ी जिससे गांधी का पार्थिव शरीर राजघाट लाया गया।

मस्जिद-ए-जहाँ-नुमा

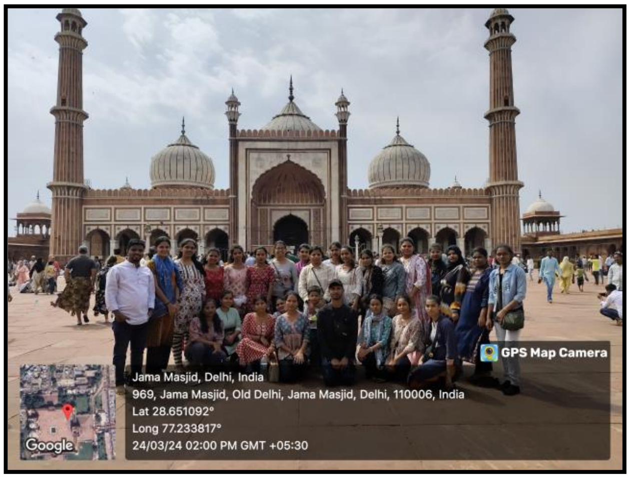

स्थान : शाहजहानाबाद, पुरानी दिल्ली

मुगल बादशाह शाहजहाँ ने **1650 और 1656** के बीच शाहजहानाबाद के सबसे ऊंचे स्थान पर **जामा मस्जिद** का निर्माण कराया। इसका निर्माण लगभग **5000 श्रमिकों** द्वारा किया गया था। कार्यबल विविध था, जिसमें भारतीय, अरब, फारसी, तुर्क और यूरोपीय शामिल थे।

जामा मस्जिद पर अनेक हमले हुए

जामा मस्जिद विस्फोट

14 अप्रैल 2006 को, दो विस्फोट हुए जो शुक्रवार की नमाज के तुरंत बाद हुए और तेजी से हुए। यह स्पष्ट नहीं है कि विस्फोट कैसे हुए। हताहतों में एक की हालत गंभीर थी, जबकि आठ अन्य लोगों को मामूली चोटें आईं। इमाम अहमद बुखारी ने टिप्पणी की, "हमारे लोगों में गुस्सा है लेकिन मैं उनसे शांति बनाए रखने की अपील कर रहा हूं।"

2010 जामा मस्जिद हमला

15 सितंबर 2010 को, मस्जिद के गेट नंबर तीन के पास खड़ी एक बस पर मोटरसाइकिल पर बंदूकधारियों द्वारा की गई गोलीबारी के बाद दो ताइवानी पर्यटक घायल हो गए। हमले के बाद

पुलिस ने 30 लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया और इलाके को किले में तब्दील कर दिया गया क्योंकि भारी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात थे।

नवंबर 2011 में, दिल्ली पुलिस ने इंडियन मुजाहिदीन के छह सदस्यों को गिरफ्तार किया, जिनके बारे में माना जाता था कि वे पुणे जर्मन बेकरी विस्फोट के साथ जामा मस्जिद विस्फोट के पीछे थे। सूत्रों ने कहा कि "'मुख्य आदमी' इमरान" ने कथित तौर पर मस्जिद के बाहर एक कार में बम रखा था। विस्फोट का कारण इमाम ने "अर्ध-नग्न" विदेशियों को अंदर जाने की इजाजत दी थी।

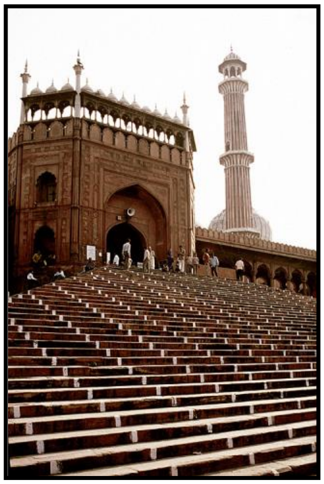

सीढ़ियों पर बैठने की अनुमति नही है इस कारण थोड़े थोड़े वक्त के बाद वहाँ पानी छिड़का जाता है।

मस्जिद में एक घडी है जिसे **धूप घड़ी** कहा जाता है।

पुराने जमाने में इस धूप घड़ी के जरीए वक़्त, और खास तौर से जुहर (दोपहर) की नमाज़ का वक़्त तै किया जाता था।1831 ई.

लाल किला

स्थान: पुरानी दिल्ली

इसके बाद हमने लाल किले की ओर प्रस्थान किया। ऐतिहासिक रूप से मुगल सम्राटों के मुख्य निवास के रूप में कार्य करता था । सम्राट शाहजहाँ ने 12 मई 1639 को लाल किले का निर्माण शुरू कराया। इसके डिजाइन का श्रेय वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी को दिया जाता है, जिन्होंने ताज महल का भी निर्माण किया था ।

1739 में मुगल साम्राज्य पर नादिर शाह के आक्रमण के दौरान किले की कलाकृतियाँ और आभूषण लूट लिए गए थे।15 अगस्त 1947 को भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाहौरी गेट के ऊपर भारतीय ध्वज फहराया । हर साल भारत के स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर, प्रधान मंत्री किले के मुख्य द्वार पर भारतीय तिरंगा झंडा फहराते हैं और परेड भी होती है।

निष्कर्ष

१८ से २६ मार्च तक के इस ८ दिन के सफ़र में हमने अनगिनत यादें संजो ली थी। अनेक ऐतिहासिक स्थल, प्रख्यात महाविद्यालय से लेकर अनेक मंदिरों के दर्शन कर उनके अनोखे इतिहास से परिचित हुए। भ्रमण के लिए की जाने वाली पूर्व तैयारियाँ। स्थल चुनने से लेकर ट्रेन की बुकिंग तक की तैयारियाँ छात्रों के संयोग के साथ की गयी थी।

इस भ्रमण के पूर्व हमने इन सारी जगहों के बारे में केवल सुना था तस्वीरे देखी थी, पर भ्रमण के दौरान हमने विविध क्षेत्रों को सिर्फ देखा ही नहीं बल्कि क्षेत्र विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व को भी जाना।

इस दौरान घर से दूर दोस्तों और प्रोफेसर से साथ एक दूसरे को जानने का, संभालने का उसी के साथ सबसे महत्वपूर्ण एक दूसरे के साथ तादाम्य स्थापित करना जरूरी था। इस दौरान हमारी रेल यात्रा बहुत सुखद रही। और अगर दिल्ली की बात करे तो जो अभी तक सुना था वो खुद की नजरों से देख भी लिया। दिल्ली का प्रदूषण, वहाँ के लोग, उनके रहने का तौर- तरीका, वो छोटे- छोटे बच्चे जो हर राहगीरों का हाथ ऐसे थाम लेते थे जैसे मेरा उसका कोई पहले का नाता हो। जिन बच्चों के हाथों में किताबें होनी चाहिए थी, वे चौराहे पर फुल बेचते नज़र आ रहे थे। तो कही अपनी जान जोखिम में डालकर, कलाकृतियाँ दिखाकर एक वक्त की रोटी का इंतजाम किया जा रहा था।

दिल्ली के विश्व विद्यालयों की बात करे तो उनका अपना - अपना इतिहास है। वही दूसरी ओर **जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय** तो अपनी राजनीति के लिए हमेशा चर्चा में रहता ही है। और सौभाग्य से हमें उनका चुनाव देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहीं दूसरी तरफ शहाजहाँ के कला प्रेमी होने का अनेक प्रमाण मिले। जैसे ताज महल और लाल किला उनकी कला की रुचि झलकती है।

इस दौरान किसी अंजान शहर में जाकर हमारा आत्म विश्वास ही नहीं बल्कि हमारी क्षमता में वृद्धि भी हुई। पुरातत्व के संदर्भ में साक्ष्य जुटाकर, हमारी यादों को दिल में कैद करके हमारी यात्रा सफल रही।